नारीवाद से नवाचार तक साहित्य में बदलते समय की आहट

- कलम की नई करवट, स्त्री दृष्टि, तकनीकी हस्तक्षेप और साहित्यिक परिवर्तन
- अंतिम दिन साहित्य की नई धाराओं और विमर्शों पर केंद्रित तीन सत्रों का हुआ आयोजन

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : साहित्य अकादमी और राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय साहित्यिक सम्मेलन का समापन हुआ। जब शब्द समाज का आईना बनते हैं, तब साहित्य केवल कल्पना नहीं, बल्कि परिवर्तन का माध्यम बन जाता है। सम्मेलन के अंतिम दिन साहित्य की नई धाराओं और विमर्शों पर केंद्रित तीन महत्वपूर्ण सत्रों का आयोजन किया गया।

राष्ट्रपति भवन मे आयोजित साहित्य सम्मेलन के अंतिम दिन चर्चा में अपने विचार रखती लेखिकाएं • सौजन्य: आयोजक

प्रथम सत्र में भारत का स्त्रीवादी साहित्य नए आधार विषय पर आधारित रहा। इसकी अध्यक्षता प्रख्यात ओड़िया लेखिका प्रतिभा राय ने की। उन्होंने 15वीं सदी के लक्ष्मी पुराण को भारतीय स्त्रीवादी साहित्य की बुनियाद बताया और इसे रचनात्मकता की विविध अभिव्यक्ति करार दिया। लेखिका महुआ माजी ने नारीवादी लेखन को पितृसत्ता के प्रतिरोध का माध्यम बताते हुए स्पष्ट किया कि यह पुरुष विरोधी नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक संरचनाओं की आलोचना है। दूसरा सत्र 'साहित्य में परिवर्तन बनाम परिवर्तन का साहित्य' विषय पर केंद्रित रहा।

साहित्य अकादमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने साहित्य और समाज के अंतर्संबंधों की विवेचना की। लेखिका ममता कालिया ने हर हाथ में एक किताब की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए साहित्य को जनचेतना से जोड़ने की वकालत की।

अंतिम सत्र में प्रो. अभय मौर्य ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल युग में साहित्य की संभावनाओं पर विचार रखा। इस अवसर पर साहित्य अकादमी के सचिव डा. के. श्रीनिवासराव ने महिला लेखन को समर्थन देने की प्रतिबद्धता दोहराई।